''मैं एक बात जानता हूं''
(9:6-41)

कई बार ''प्रार्थनाओं का उत्तर मिल जाने'' से हमारे जीवन मुश्किल में पड़ सकते हैं। कोई ऐसी बात होती है जिसे हम अपने जीवन के लिए अच्छा मानते हैं परन्तु वास्तव में उससे जीना और भी कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए, लॉटरी जीतने वाले लोगों को ही लें। कुछ वर्ष पूर्व, *न्यूयॉर्क टाइम्स संडे मैगज़ीन* [1] में लॉटरी जीतने वालों पर एक लेख छपा और उसमें बताया गया कि लॉटरी जीतने से उनके जीवन कैसे प्रभावित हुए हैं। देखा गया कि ये लोग लॉटरी जीतने को एक मिली जुली आशीष मानते थे। लॉटरी में जीते हुए धन से उन्होंने घर और कारें तो खरीद लीं, पर इससे उनके जीवन में अनपेक्षित समस्याएं पैदा हो गईं।

बहुत से लॉटरी जीतने वालों ने दूर-दूर के रिश्तेदारों से फोन पर उनसे कर्ज मांगने, वित्तीय सलाहकारों द्वारा निवेश के ''बढ़िया'' ढंग बताने और ऐसे लोगों के भय से जिन्हें पैसे की जरूरत थी और उनसे जीतने का ढंग जानना चाहते थे, अपने फोन के कनेक्शन कटवा दिए। डोनल्ड ब्लेकली नामक एक इलैक्ट्रिक इंजीनियर था जिसने 1982 में 4.2 मिलियन डॉलर की लॉटरी जीती थी। बेशक उसके पास अब अपार धन हो गया था, परन्तु वह इस बात से दुखी था कि धन मिलने से रिश्तेदारों से उसके सम्बन्ध बदल गए थे। एक मित्र जिसने ब्लेकली से दो हज़ार डॉलर कर्ज़ लिया था, मांगने पर ब्लेकली से नाराज हो गया। वह मित्र हैरान था, ''4.2 मिलियन डॉलर [लगभग 18 करोड़ 90 लाख रुपये] वाले आदमी को दो हज़ार डॉलर [90 हज़ार रुपये] की छोटी सी राशि के कर्ज़ में दिलचस्पी लेने का क्या मतलब है ?'' ब्लेकली ने कहा, ''मुझे धन खोने का दुख तो है, परन्तु इससे भी ज़्यादा दुख मुझे एक मित्र के खोने का है।'' उसने आगे कहा कि उसके सहकर्मी पहले तो बहुत खुश थे कि उसने लॉटरी जीती है। लेकिन लगभग छह महीने बाद, उनकी उत्सुकता घृणा में बदल गई और ब्लेकली को अंततः अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी। सचमुच कई बार ''प्रार्थना का उत्तर मिल जाने'' से हमारे जीवन में मुश्किलें पैदा हो जाती हैं।

जन्म के उस अंधे आदमी की यीशु से मुलाकात उसके जीवन का सबसे अद्‌भुत दिन था। हर अंधा अपनी आंखों की रोशनी के लिए प्रार्थना करता है। निःसंदेह, वह भी कभी-कभी स्वप्न देखता होगा कि जब वह देख पाएगा तो क्या करेगा। फिर एक दिन, बिना किसी चेतावनी के, एक आदमी उसके पास आया और उसने उसकी दुनिया ही बदल डाली। यीशु

ने भूमि से मिट्टी लेकर अपने थूक से गूंथ कर उसकी आंखों पर मल दी और उसे शीलोह के कुंड में जाकर धो लेने के लिए कहा (9:6)। यूहन्ना ने लिखा है, ''सो उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया'' (9:7ख)। उस अंधे को सबसे बड़ी प्रार्थना का उत्तर मिल गया था! परन्तु उसे इस बात का ज़रा भी अहसास नहीं था कि यह उसके जीवन में सबसे कठिन दिन का आरम्भ होगा।

इस पाठ के लिए पवित्र शास्त्र का हमारा भाग 9:6–41 विश्वास के मार्ग पर एक आदमी की कहानी को आगे बढ़ाता है। यीशु कहानी आरम्भ करके इसे अंतिम मोड़ और विस्तार देने के लिए अंत में वापस आया, यह वृत्तांत मुख्य रूप से किसी समय अंधे रहे आदमी और यीशु में विश्वास के उसके सफ़र पर केन्द्रित है। बड़े ही दिलचस्प ढंग से, इन आयतों को उस आदमी के बढ़ते रहने वाले विश्वास की बातों से समझाया गया है।

''मैं वही हूं'' (9:6-9)

उस अंधे की आंखें ठीक होते ही, उसके पड़ोसी इस अविश्सनीय घटना पर चर्चा करने लगे। कोई पूछने लगा, ''क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख मांगा करता था?'' (9:8)। कुछ लोगों ने उत्तर दिया, ''यह वही है: औरों ने कहा, नहीं; परन्तु उसके समान है'' (9:9)। उनकी चर्चाएं किसी परिवार द्वारा अस्पताल में पड़े मरीज़ के सामने ही बातें करना पर मरीज़ की ओर ध्यान न देना जैसी थीं! ''आपको क्या लगता है कि उसका क्या हाल है?'' ''मेरे ख्याल से आज पहले से कुछ ठीक है।'' ''मुझे नहीं लगता। उसका चेहरा तो आज कुछ पीला सा लग रहा है।'' ''डॉक्टर क्या कहता है?'' ''तुम्हें क्या लगता है कि वह ठीक हो जाएगा?''

अंत में, वह आदमी जो चंगा हो गया था, स्वयं कहता है, ''मैं वही हूं'' (9:9)। वह अपनी उपेक्षा नहीं चाहता। बेशक वह कई वर्षों से एक अंधा भिखारी था, पर अब वह कुछ बातों में बहुत ही समझदार हो गया था! उसे पूरा विश्वास हो गया था कि वह अंधा था और अब देखने लग पड़ा है, इसलिए उसने दृढ़ता से वही बताया जो उसे पता था कि सत्य है: ''मैं वही हूं!''

हम में से हर एक के लिए विश्वास का सफ़र व्यक्ति के रूप में अपने बारे में जानने से आरम्भ हो सकता है। आपका अपने ऊपर अधिकार है। आपको यकीन हो सकता है कि आप एक व्यक्ति और एक जिंदा जीव हैं। हो सकता है कि वैज्ञानिक आपको आपके बारे में एक बात बताएं, आपके बॉस दूसरी बात और आपका परिवार कुछ और ही। परन्तु, आप जानते हैं कि आप जीवित हैं, आप एक आत्मिक प्राणी हैं और किसी ऐसी खोज में हैं जिसे आपने अभी पूरी तरह से नहीं पाया। विश्वास के मार्ग पर चलना आरम्भ करते समय हम ऐलान करते हैं ''मैं वही आदमी हूं!''

''यीशु ने मिट्टी सानी'' (9:10-12)

उस व्यक्ति की बात से कि वह वही भिखारी था जिसे उन सब ने मन्दिर के निकट देखा

था, इस आश्चर्यकर्म से पैदा हुई उलझन दूर नहीं हुई थी। इस पहेली की कुछ बातें उनकी समझ से बाहर थीं। क्योंकि उन्होंने ऐसा आश्चर्यकर्म अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था! उन्होंने उससे पूछा कि यह अद्‌भुत बात कैसे हो गई। बड़े ही स्पष्ट और सरल ढंग से, उसने अपनी कहानी बताई कि ''यीशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; अत: मैं गया, और धोकर देखने लगा''(9:11)।

पुन:, यह आदमी जिसका समाज में कोई सम्मान नहीं था और जिसके पास कोई सम्पत्ति भी नहीं थी, कुछ बातों में संसार का सबसे बड़ा विशेषज्ञ था। वह अच्छी तरह जानता था कि वह कौन था और उसे क्या अनुभव हुआ था। ऐसे ही, विश्वास के सफ़र पर चलने वाले सब लोग अपने जीवनों के विशेषज्ञ होते हैं। कोई कह सकता है, ''यीशु से मिलने से पहले मैं बहुत बुरा था।'' कोई दूसरा इस बात की घोषणा कर सकता है, ''यीशु द्वारा मुझे छुड़ाने से पहले मैं अपने आप से बाहर (निराशा में या नशे में) था।'' ऐसे विषयों पर आप बड़े स्पष्ट ढंग से बात कर सकते हैं, क्योंकि केवल आप ही ऐसे व्यक्ति हैं जो यह बता सकते हैं कि आप कौन हैं और यीशु ने आपके जीवन में क्या किया है। आपसे बेहतर इस बात को दूसरा कोई नहीं बता सकता!

''वह एक भविष्यवक्ता है''
(9:13-17)

अभी भी, अंधे जन्मे उस आदमी को जानने वाले उसके साथ होने वाली घटना को अच्छी तरह समझ नहीं पाए थे, सो उन्होंने धार्मिक विशेषज्ञों अर्थात फरीसियों को बुलाया। जिस दिन यीशु ने उसे चंगा किया था वह सब्त का दिन था जो यहूदियों के विश्राम का पवित्र दिन होता था। इस कारण वे बड़ी दुविधा में पड़ गए। इस संदेह से कि किसी आदमी को सब्त के दिन चंगा किया जा सकता है या नहीं, उन्होंने उस आदमी से कहा कि वह अपनी कहानी फिर से दोहराए। उससे सुनकर उन्होंने निष्कर्ष निकाला, ''यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता'' (9:16)। फरीसियों के दिमाग में इस मसले का हल हो गया होगा, जो उस चंगाई को एक जिज्ञासा के रूप में देखते थे। पर उस आदमी को जानने वाले लोग फरीसियों के इस उत्तर से बिल्कुल संतुष्ट नहीं हुए। वे हैरान थे कि यदि कोई परमेश्वर की ओर से नहीं है तो वह ऐसा अद्‌भुत चमत्कार कैसे कर सकता था।

इस बात पर चर्चा जारी रहने से लोगों ''में फूट पड़ी'' (9:16)। सुसमाचार की यूहन्ना द्वारा लिखी गई पूरी पुस्तक में, हम देखते हैं कि यीशु लोगों को उसके बारे में निर्णय लेने के लिए दबाव बनाता रहता है। लोगों को अपनी उपेक्षा करने की अनुमति न देकर, यीशु ने यह ज़ोर दिया कि वे प्रमाण देखकर विचार करें और निर्णय लें कि वह परमेश्वर की ओर से था या शैतान की ओर से। जहां तक यीशु और यूहन्ना की बात थी, उन दोनों के लिए इस निर्णय से कम कोई बीच का रास्ता नहीं था।

घबराए हुए, लोग फिर उस आदमी के पास आए जो अंधा जन्मा था, और उससे पूछने

लगे कि उसका इस बारे में क्या कहना है। विश्वास की ओर एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए, उसने उत्तर दिया, ''वह भविष्यवक्ता है'' (9:17)। यह कहकर, वह पूर्व भिखारी अपने विषय में नहीं, बल्कि उस आदमी के बारे में जिसने उसे चंगा किया था, दावा कर रहा था। उसका निष्कर्ष था कि इस आदमी के पास परमेश्वर की सामर्थ है। फरीसी कुछ भी कहें कि यीशु कितना बुरा था, परन्तु अंधा जन्मा यह आदमी इस बात से कायल था कि वह एक भला मनुष्य है और उसमें परमेश्वर की सामर्थ है।

''मैं एक बात जानता हूं'' (9:18-25)।

अंधे जन्मे उस आदमी की हर बात से तनाव बढ़ता जा रहा था। फरीसियों ने उसके इस विश्वास को कि यीशु परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक नबी है, पूरी तरह से नकार दिया था। कइयों को तो इस बात पर संदेह था कि यह आदमी वही है भी या नहीं जो वहां बैठकर भीख मांगा करता था। इसलिए, उन्होंने उसके माता-पिता को बुलाकर उनसे पूछताछ की। ''क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अन्धा जन्मा था? फिर अब वह क्योंकर देखता है?'' (9:19)। उस आदमी के माता-पिता डर गए थे। उन्हें प्रसिद्धि पाने की चाह नहीं थी पर परिस्थिति को देखकर वे भयभीत हो गए थे। उन्होंने तो यह भी सुना था कि जो कोई भी यीशु के पक्ष में कोई बात करेगा उसे आराधनालय से निकाल दिया जाएगा (9:22)। इस भय से कि उनके मित्र, परिवार और रोजगार छूट जाएगा, माता और पिता ने (जिन्होंने बहुत पहले अपने पुत्र को भीख मांगने के लिए छोड़ दिया था) एक बार फिर उसे विवाद में छोड़ दिया। उनका उत्तर था ''वह सयाना है; उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा'' (9:21)। यह दिन उनके जीवन का सबसे अच्छा दिन होना चाहिए था, क्योंकि उनके पुत्र को देखने का दान मिल गया था परन्तु बजाय इसके उनके लिए यह एक भयानक और लज्जा का दिन भी था।

प्रश्न पूछने वाले फिर उस आदमी की ओर मुड़े और उससे पूछने लगे कि वह देखने कैसे लग पड़ा। वे उससे कहने लगे कि ''परमेश्वर के नाम को महिमा दे।'' इस अभिव्यक्ति का परमेश्वर की आराधना या स्तुति से कोई सम्बन्ध नहीं था। बल्कि यह ''सच्ची बात बता'' कहने का एक यहूदी ढंग था![2] यह किसी अपराधी से बात करने का एक ढंग था जिसने अभी तक उस अपराध को स्वीकार नहीं किया हो जिसके बारे में सबको यकीन हो कि यह उसी ने किया है। उनके शब्दों से अंधे जन्मे उस आदमी के प्रति उनके बढ़ते भय, क्रोध और बेचैनी का पता चलता था।

जैसे कि हमने पहले भी देखा है, उस आदमी ने अपने प्रश्न पूछने वालों को बड़ी शांति और पूरे आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिए। उसने उन्हें बताया, ''मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं: मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' (9:25)। धार्मिक चर्चा की बहुत सी बातों में, यह आदमी उनका जवाब नहीं दे पाया था। धमकाने पर, तो वह उन तथ्यों का ध्यान दिलाता था: ''मैं एक बात जानता हूं, कि मैं अंधा था और अब देखता हूं।''

‘‘वह परमेश्वर की ओर से है’’
(9:26-34)

अंधे जन्मे आदमी के हठ से परेशान, फरीसी प्रश्न पूछने की सारी प्रक्रिया को नये सिरे से दोहराने लगे (9:26)। उनकी चालाकियां देखकर मुझे कुछ वर्ष पूर्व एक हवाई जहाज़ में आतंकवाद विरोधी ढंग बताए जाने का ध्यान आता है। जहाज के कर्मचारी ने सभी यात्रियों को एक ओर ले जाकर एक-एक करके कई प्रश्न पूछे थे। फिर, कुछ ही मिनटों बाद एक और कर्मचारी हमसे वही प्रश्न पूछता है। अन्त में, एक तीसरा कर्मचारी हमसे वही प्रश्न एक बार फिर पूछता है ! बाद में हमने देखा कि तीनों कर्मचारी इकट्ठे खड़े होकर यह देखने के लिए कि हमारे उत्तर उन तीनों के प्रश्नों से मेल खाते हैं, अपने बनाए नोट्स की तुलना करने लगे। उस जन्म के अंधे को भी उस दिन धर्मगुरुओं द्वारा प्रश्न पूछने पर ऐसा ही लगा होगा।

एक ही प्रश्न का दूसरी बार उत्तर देते हुए, वह आदमी स्थिति में यह व्यंग्य जोड़ने लगा। उसने यहूदी अगुओं से पूछा कि क्या वे उससे दोबारा प्रश्न इसलिए पूछ रहे हैं कि उनकी रुचि यीशु में है और उसके चेले बनना चाहते हैं (9:27)। जैसी उम्मीद थी, वे क्रोधित हो उठे। फिर उनसे अपनी बातचीत के अंतिम अवसर में अंधे जन्मे व्यक्ति ने इस्राएल के कुछ प्रसिद्ध और उच्च शिक्षा प्राप्त विचारकों की सोच के असंगत होने की ओर इशारा किया। उसने दावा किया कि किसी ने कभी भी किसी जन्म के अंधे के चंगा होने जैसा आश्चर्यकर्म नहीं देखा था। वास्तव में, यह एक अद्‌भुत कार्य था। निश्चय ही यह आश्चर्यकर्म परमेश्वर की ओर से था; फिर भी फरीसियों को जो अपने आपको परमेश्वर के इतना निकट मानते थे, इस बात का बिल्कुल ज्ञान नहीं था कि यीशु कहां से था और उसने क्या किया था। उस आदमी का स्पष्ट निष्कर्ष यह था कि यदि यीशु परमेश्वर की ओर से न होता, तो वह इतना बड़ा काम नहीं कर सकता था। सार में, उसने कहा, ‘‘वह परमेश्वर की ओर से है’’ (9:33)।

अंधे जन्मे इस आदमी से परेशान होकर, फरीसी लोग शब्दों की गोलाबारी करने लगे। उसने हमें समझाने का साहस कैसे किया ? उसे व्यवस्था का ज्ञान नहीं था और न ही उस पर यह भरोसा किया जा सकता है कि वह जिम्मेदारी से सोच सकता है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने ऐलान किया कि वह पूरी तरह से अपने पापों में पैदा हुआ था (आयत 2 में पाप और कष्ट के बारे में चेलों के प्रश्न को याद करें)। गाली-गलौज करने के बाद ‘‘उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया’’ (9:34)। स्पष्टतया उन्होंने उसके साथ बिल्कुल वही किया जिसका उसके माता-पिता को भय था कि वे उसके साथ ऐसा ही करेंगे, उन्होंने उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया।

अंधे जन्मे उस आदमी का अनुभव हमें स्मरण कराता है कि यीशु में विश्वास करने के कारण कई बार हमारे जीवन में उलझनें बढ़ सकती हैं। हमें यह किसने बताया कि यीशु हमारा जीवन सदा के लिए आसान बना देगा ? प्रकाश और अंधेरा कभी एक साथ नहीं रहते। जरूरी नहीं कि विश्वास करने से परिवारों में शांति आ जाए क्योंकि कई बार इससे

झगड़ा और भी बढ़ जाता है। विश्वास का अर्थ यह नहीं कि इससे परिवारों में शांति आ जाएगी; कई बार तो इसके कारण परिवारों में झगड़े उत्पन्न हो जाते हैं। आवश्यक नहीं कि विश्वास से नौकरी आसानी से मिल जाए; कई बार इसके कारण लोगों को नौकरी से हाथ भी धोना पड़ सकता है। यीशु ने एक बार कहा था:

> क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं? मैं तुम से कहता हूं; नहीं, वरन अलग कराने आया हूं। क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो से और दो तीन से। पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से विरोध रखेगा; मां बेटी से, और बेटी मां से, सास बहू से, और बहू सास से विरोध रखेगी (लूका 12:51–53)।

उस सारी कठिनाई से जो कई बार विश्वास के कारण आ सकती है, हो सकता है कि हम विश्वास फिरने की परीक्षा में पड़ जाएं। परन्तु, अंधे जन्मे उस आदमी ने रोशनी देख ली थी (एक से अधिक तरह), और उसके लिए पीछे मुड़ने की बात सोचना भी सम्भव नहीं था। वह पूरी तरह से आश्वस्त था कि जो कुछ वह विश्वास करता था वह सही था और कोई उसे डराकर उस बात से जिसे वह जानता था कि सत्य है, पीछे नहीं कर सकता था।

‘‘मैं विश्वास करता हूं’’ (9:35-41)

इस आदमी के साथ इतना कुछ कितनी जल्दी हो गया था! उसके जीवन का सबसे बड़ा दिन ही सबसे विवादपूर्ण और कठिन बन गया था। उसे आंखें मिल गई थीं, पर उसे आराधनालय से निकाल दिया गया था। अन्त में वह अपने पड़ोसियों के चेहरों में झांक सकता था, पर जितने चेहरे वह देख पाया उन सब पर क्रोध और उलझन ही दिखाई दे रही थी। वह समाज में सम्मान नहीं पा सका, क्योंकि जिस समाज का भाग बनने की वह इतने लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रहा था, उसी समाज ने उसे ठुकरा दिया था। अभी वह इस कशमकश में ही था, कि एक ऐसी आवाज़ ने उसका अभिवादन किया जो उसकी जानी पहचानी थी। परन्तु उसका चेहरा उसने कभी नहीं देखा था, यह आवाज़ यीशु की थी!

यीशु ने उससे पूछा कि क्या वह मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करता है। इस प्रश्न से उलझन में पड़े, पर पूछने वाले में भरोसा रखकर उस आदमी ने कहा, ‘‘हे प्रभु; वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं?’’ (9:36)। यीशु ने उसे बताया कि वही मनुष्य का पुत्र है। यह सुनकर अंधा जन्मा वह आदमी पुकार उठा, ‘‘हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं’’ (9:38) और उसे दण्डवत किया। विश्वास की ओर उस आदमी की यात्रा एक मील के पत्थर तक पहुंच चुकी थी। अब वह कह सकता था कि ‘‘मैं विश्वास करता हूं।’’

कहानी के आगे बढ़ने के साथ उस आदमी के विश्वास के बढ़ने पर ध्यान दें। वह ‘‘मैं वही हूं’’ से ‘‘यीशु ने मिट्टी सानी’’ से ‘‘वह एक भविष्यवक्ता है’’ से ‘‘मैं एक बात जानता हूं’’ से ‘‘वह परमेश्वर की ओर से है’’ से ‘‘मैं विश्वास करता हूं’’ तक चलता गया। जो कुछ भी उसे उस समय समझ में आया, उसी के आधार पर उसने सावधानीपूर्वक हर कदम

उठाया। उसने अज्ञात में ''विश्वास की छलांग'' नहीं लगाई, केवल विश्वास की ओर स्थिर और मजबूती से कदम रखे।

सारांश

यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''मैं जगत की ज्योति हूं'' (9:5)। हमारे संसार पर पाप का घोर अंधेरा छाया हुआ है। यह अंधेरा रोशनी को सहन नहीं कर सकता, क्योंकि दोनों का आपस में छत्तीस का आंकड़ा है। यदि आप रोशनी के लोग बनना चाहते हैं, तो आप अपने आपको अंधेरे की शक्तियों के विरुद्ध एक भयंकर युद्ध में पाएंगे। आप उनके विरुद्ध खड़े हो सकते हैं! आप जो कुछ अपने बारे में, जीवन के बारे में और यीशु के विषय में जानते हैं, उस पर दृढ़ रह सकते हैं। ऐसा करके, यदि सुबह को सूर्य भी न उगे, तो आप फिर भी जानते हैं कि आप कौन हैं और आपका विश्वास क्या है!

अंधा जन्मा वह व्यक्ति अपने चंगा होने के दिन होने वाले विवाद की कल्पना भी नहीं कर सकता था। परन्तु मेरा विश्वास है कि यदि उसे पहले पता होता कि चंगा होकर उसे इतनी मुश्किलें सहनी पड़ेंगी, तौ भी वह अंधा रहने से आंखें मिलने को ही पहल देता। यीशु सचमुच ''जगत की ज्योति है।'' आज हमें ज्योति में आने का निमन्त्रण ही है!

पाद टिप्पणियां

[1]*न्यू यॉर्क टाइम्स संडे मैगज़ीन,* 31 जनवरी 1993, xiii-NJ-4:6. [2]देखें यहोशू 7:19.